कविकुलविद्याधर, सकल कलाधर, राजराज वर वेश बने।
गणपति सुखदायक, पशुपति लायक, सूर सहायक कौन गनै॥
सेनापति बुधजन, मंगलगुरुगण, धर्मराज मन बुद्धि धनी।
बहु शुभ मनसाकर, करुणामय अरु सुर-तरंगिनी शोभसनी॥42॥

शब्दार्थ—कवि = शुक्र, काव्य-रचना करने वाले। विद्याधर = देव-विशेष, विद्वान। कलाधर = चन्द्रमा, समस्त कलाओं को जानने वाले। राजराज = कुवेर, राजा दशरथ। गणपति = गणेश, एक-एक समूह का प्रधान मनुष्य अर्थात् अधिकारी। सुखदायक = इन्द्र, सुख देने वाले। पशुपति = शिव, गजशाला आदि के अधिकारी। सूर = सूर्य, वीर। सेनापति = कार्तिकेय, सेना का सर्वोच्च व्यक्ति। बुधजन = बुद्ध, बुद्धिमान लोग। मंगल = मंगलग्रह, मांगलिक पाठ करने वाला ब्राह्मण। गुरु = बृहस्पति, शिक्षक। धर्मराज = यमराज, जज। मनसाकर = कल्पवृक्ष तथा कामधेनु, मनवांछित फल देने वाला। करुणामय = विष्णु, दयावान्। सुर-तरंगिनी = आकाश-गंगा, सरयू नदी।

प्रसंग—उपर्युक्त छन्द में केशव ने अयोध्या को 'देवपुरी सम' बताया है। देवपुरी में शुक्र, चन्द्रमा, कुबेर, गणेश, महादेव, विष्णु आदि अनेक देवता निवास करते हैं। अयोध्या में इनके पूरक कौन-कौन व्यक्ति हैं, इसी बात को इस छन्द में बताया गया है। महर्षि विश्वामित्र अपने शिष्यों से अयोध्या की महिमा का वर्णन करते हुए कह रहे हैं।

व्याख्या—यह अयोध्या नगरी स्वर्गलोक के समान है क्योंकि यहाँ पर शुक्र के समान काव्यों की रचना करने वाले कविगण, विद्याधर के समान विद्वान, चन्द्रमा के समान समस्त कलाओं को जानने वाले पंडित, कुबेर के समान वैभव-सम्पन्न महाराज दशरथ, गणेश तथा इन्द्र के समान सुख देने वाले गणों (समूहों) के अधिकारी, शिव के समान योग्य गौशाला आदि के स्वामी, और सूर्य के समान सहायक सूर्यवीर इतने रहते हैं कि इनकी गणना नहीं की जा सकती। यहाँ पर कार्तिकेय के समान शक्ति सम्पन्न सेनापति, बुध के समान बुद्धिमान, मंगल के समान मांगलिक पाठ करने वाले ब्राह्मण, यमराज के समान मन और बुद्धि के धनी अर्थात् विशाल मन और बुद्धिवाले जन रहते हैं। यहाँ का राजा कल्पवृक्ष और कामधेनु के समान सबको मनवांछित फल देने वाला है, वह विष्णु के समान दयावान् है और यहाँ पर शोभा से युक्त आकाश-गंगा के समान सरयू नदी बहती है। अतः अयोध्या स्वर्गलोक के समान है क्योंकि वहाँ पर जो वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं, उन्हीं के समान यहाँ पर भी मिलती हैं।

अलंकार—मुद्रा।